Lecture No. (01)

Name of the college A.P.S.M. College, Barauni, Begusarai L.N.M.U. Darbhanga

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)

Deptt - A.I.H.&C

Lession - plan for class. B.A part II (H) paper IV

Date - 29-06-2021

Name of the Topic - अशोक के लेखों में संघ का वर्णन

अशोक ने कलिंग युद्ध के पश्चात् बौद्ध मत को स्वीकार कर लिया और बुद्ध धर्म के प्रचार के लिए उसने धर्मलेख भी खुदवाया। भाब्रू (जयपुर, राजस्थान) के लेख में निम्नलिखित वाक्य मिलते हैं।

'प्रियदसि राजा मागधे संघं अभिवादेतु

तथा

हेवा बुधसि धंमसि संघसिति गालवे।

वह मगध के समीप मगध के संघ को अभिवादन करता है, तथा त्रिरत्न (बुद्ध, धर्म, संघ) में अपना विश्वास प्रकट करता है। उसी के समय में बौद्धमतानुयायी चार वर्गों में विभक्त हो गए थे, जिसे परिषद के नाम से वर्णित किया गया है। (1) भिक्षु (2) भिक्षुणी संघ (3) उपासक तथा (4) उपासिका।

धर्मशासन में उसका आदेश था कि सभी बौद्ध धर्मग्रंथों का अध्ययन करें। अशोक ने संघ संस्था को सुसंगठित तथा बलवान बनाने के लिए पृथक धर्मलेख तीन स्थानों के (साँची, कौशांबी तथा सारनाथ) स्तंभों पर खुदवाया था। उसका

P.T.O.

Scanned with CamScanner

आदेश था कि जो कोई (भिक्षु अथवा भिक्षुणी) संघ की
हानि कि संघ में विद्रोह पैदा करेगा या करेगी यानी
विघटित करने का प्रयत्न करेगी, उसे श्वेत वस्त्र
पहना कर (यानी भिक्षु से गृहस्थ बना), संघ से
बहिष्कृत कर दिया जाएगा।

"देवानां पिये आनपयति, ये केनपि संघे भेतवे
ए चु खो भिखु वा भिखुनि वा
ये संघ भाखति भिखु वा भिखुनि वा
ओदातानि दुसानि सनंधापयितु
अनावाससि वासा पेतविये। इदर
हिये किति संघे समगे चिलथितीके सियाति।
[साँची स्तम्भ लेख]

इस लेख का अभिप्राय यह था कि संघ
चिरस्थायी रहे तथा उसमें भेद-भावना का
प्रवेश न हो सके।

निष्कर्ष :- यह है कि अशोक के लेखों के
आधार पर ईसा पूर्व तीसरी शती से
संघ की स्थिति ज्ञात हो जाती है।

भारती कुमारी
A.I.3C.2C
Date